Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-278-281

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.-278-281
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
सेंट स्टीफेंस, कॉलेज, उषवूर.

Corresponding Author :

डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
सेंट स्टीफेंस, कॉलेज, उषवूर.

इन्सानियत की मिसाल पेश करता उपन्यास : यमदीप

शोध सार -: स्त्री -पुरुष से इतर लिंग वाले ट्रांसजेंडर की पहचान को समाज में स्थापित करने की पहल समकालीन दौर में की जा रही है। इस दिशा में समकालीन हिंदी साहित्य की अहम भूमिका है। साहित्य की तमाम विधाओं के द्वारा उनकी पहचान को अख्तियार करने की पेशकश की जा रही है। लेखिका नीरजा माधव ने ट्रांसजेंडर समाज के लिए शिक्षा, सुरक्षा, नौकरियों में आरक्षण दिए जाने की माँग और मुख्यधारा में शामिल किये जाने की पहल अपने उपन्यास- यमदीप के द्वारा की है। उपन्यास का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है और कई संस्थाओं द्वारा नाट्य मंचन भी किया गया है जो लेखिका के लेखन की सफलता को ही दर्शाता है।

बीज शब्द -: हिजड़ा, ट्रांसजेंडर, कोती, गिरिया, गुरु, चेला, लिंग पहचान, यौनिकता, लैंगिक विविधता।

विषय-वस्तु -: यमदीप उपन्यास को पहली बार ट्रांसजेंडर को केंद्र में रखकर लिखा गया हिंदी का प्रथम उपन्यास होने का श्रेय प्राप्त है। लेखिका ने क्रूर अमानवीय समाज के समानान्तर नाजबीबी के उज्जवल चरित्र को उद्घाटित किया है। वह उदात्त, महान, मानवीय करुणा से लैस त्याग और समर्पण की मिसाल, ममता की मूर्ति, संवेदनशील, साहसी, निडर ट्रांसजेंडर है। नाजबीबी के अलावा उपन्यास में चित्रित दूसरा प्रमुख किरदार है मानवी का। मानवी दैनिक अखबार के साप्ताहिक फीचर 'आधी शक्ति' की संपादक है। वह स्त्री समस्या को समाज के सामने उघाड़ने, उसके तह तक जाने, उसे सुलझाने के लिए कार्यरत है। वह अपने जीवन में आनेवाली समस्याओं का डटकर मुकाबला करती है। इस उपन्यास के ज़रिये लेखिका ने ट्रांसजेंडर समाज से जुड़े कई भ्रमों को तोड़ने और उनसे संबंधित कई सच्चाई को उद्घाटित करने का कार्य किया है। उपन्यास लिखने की प्रेरणा को लेखिका ने यों स्पष्ट किया है कि उपन्यास का जन्म उनकी बेटी कुहू के जन्म के साथ ही 1991 में हो गया

था। बेटी के जन्म पर बधाई देने आये ट्रांसजेंडर को पहली बार लेखिका ने देखा था। तब इन्हें लेकर अनगिनत सवाल लेखिका के मन में उठने लगे। वे उनकी बेटी के जन्म पर मंगल गान करने और नेग लेने आये थे। तब लेखिका आकाशवाणी वाराणसी में कार्यक्रम अधिशास्त्री के पद पर कार्यरत थी। उन्होंने संकल्प लिया कि वे ट्रांसजेंडर समाज को आधार बनाकर रेडियो के लिए एक फीचर बनाएँगी।

एक पगली के प्रसवपीड़ा से कराहने पर मनचले लड़के सड़क पर खड़े होकर इस नज़ारे का मजा लूट रहे थे। उसकी मटमैली सफेद साड़ी खून से लथपथ पड़ी थी। तभी वहाँ से गुजरते चालीस वर्षीय नाजबीबी और उसकी साथियों की नजर वहाँ पड़ती है। पगली की चीख सुनकर वे उसके पास जाते हैं । ट्रांसजेंडर होने पर भी उनकी संवेदना मरी नहीं है। पगली को प्रसव पीड़ा से तड़पता देखकर नाजबीबी उसकी मदद में लग जाती है। उन्हें देखकर लड़कों की भीड़ छंटने लगती है। आसपास के घर की स्त्रियाँ यह दारुण दृश्य देखकर भी पगली की मदद के लिए आगे नहीं बढ़तीं। अपने घर के भीतर ही खड़ी रहती हैं। समाज की इस बदसलूकी को देखकर नाजबीबी तिलमिला उठती है। नाजबीबी के ये शब्द समाज के खोखलेपन को उजागर करने के साथ – साथ समाज के मुँह पर तीखा प्रहार करते हैं – "अब कोई पूछनहार नहीं इसका तो क्या हम भी छोड़ जायेंगे?अरे हम हिजड़े हैं, हिजड़े ....इन्सान हैं क्या जो मुँह फेर लें।"[1] लेखिका ने यह स्पष्ट करने का कार्य किया है कि अधूरे होने पर भी इन्सान की तरह ट्रांसजेंडर संवेदनशून्य नहीं होते। पगली के द्वारा एक बच्ची को जन्म देकर मर जाने पर नाजबीबी उसे पालने को ठान लेती है। मुख्यधारा का समाज अनाथ बच्ची को पालने – अपनाने के लिए भी तैयार नहीं होता। अपने साथियों की राय सुनने पर भी वह टस से मस नहीं होती, अपने बढ़ाये कदम पीछे रखने को तैयार नहीं होती। मेहताब गुरु के समझाने पर कि बच्ची को अनाथालय में देना ही उचित है, लेकिन नाजबीबी इसके लिए भी तैयार नहीं होती। बच्ची का नाम सोना रखती है।उसकी अभिभावक बन स्कूल में उसका दाखिला दिलाती है। ट्रांसजेंडरों की बस्ती में सोना की परवरिश की बात बाहरवालों के सामने छुपाई जाती है।

ट्रांसजेंडर जीवन का कड़वा सच होता है विस्थापन। अमीर -गरीब परिवार में जन्मे हर ट्रांसजेंडर को विस्थापन की पीड़ा से गुजरना पड़ता है।ट्रांसजेंडरों की यह बस्ती छोटे बीस – पच्चीस घरोंवाली है। इस बस्ती के गुरु मेहताब हैं। अधिक उम्र होने पर उन्हें बस्ती का गुरु बना दिया था। किसी को भी उनके जीवन के बारे में बहुत कुछ नहीं पता। छैलू दो साल पहले इस बस्ती में आया था वह इलाहाबाद के किसी अस्पताल में वार्डबॉय था। छैलबिहारी उसका असली नाम है। पच्चीस साल पहले नन्दरानी अपने परिवारवालों की बदनामी के कारण उन्हें छोडकर इस बस्ती में चली आई थी। वह माँ के नाम पत्र छोड़ आई थी। अपने माता -पिता के लिए आज भी उसका मन तडपता है। मेजर की बेटी होने पर भी उसे आँसू के घूट पीकर हर पल जीना पड़ता है। वह छिपकर अपने माता -पिता से फोन पर बातें करती है। वह अपनी माँ से रोते हुए कहती है कि – "मम्मी, मैं आप लोगों की बदनामी के कारण अपनी दुनिया में चली आई .....हिजड़ों की दुनिया में। मेरा हाथ – पैर अपांग होता, दिमाग खराब होता, तो भी शायद तुम रख सकती थीं लेकिन ....."[2] वह अपने माता -पिता के बिना जी नहीं सकती थी, लेकिन लोग उसके कारण उसके घरवालों को ताने दे रहे थे। नन्दरानी से यह सब सहा नहीं गया और वह खुद इस बस्ती में चली आई थी। ट्रांसजेंडर समाज में उसे शामिल करने के लिए रस्म निभाए गए थे। उसे आज भी उस दिन की याद है कि दूसरे जिलों और बस्ती से आये कई ट्रांसजेंडरों ने उसे उपहार दिए थे, नाच -गाना हुआ था। मेहताब गुरु ने उसके दोनों हाथों में लड्डू थमाकर और गिलास का दूध उसके मुँह से लगाकर उसे अपने भावी पीढ़ी के रूप में स्वीकार कर लिया था। उपन्यास के अकरम, चमेली, शबनम, मंजू, कमला सभी की यही दास्तान है। नन्दरानी अपने मम्मी -पापा को फोन करती तो उसके बड़े भाई नंदन उसे फोन करने से साफ इनकार कर देते। इसलिए जब वह फोन करती तब बड़े भाई नंदन और भाभी फोन उठाते तो वह फोन रख देती। एक दिन नन्दरानी के मम्मी -पापा उससे मिलने उसकी बस्ती में आये थे। नन्दरानी की हालत देखकर उसकी माँ का कलेजा दहल उठा था।

नन्दरानी को उसकी माँ अपने साथ ले जाना चाहती थी लेकिन वह इस सच्चाई से भी वाकिफ थी कि वह उसे अपने पास नहीं रख सकती। समाज की मानसिकता की ओर इशारा करते हुए मेहताब गुरु ने यही कहा कि –"आप इस बस्ती में नहीं रह सकते बाबूजी। और न ही अपनी बेटी को अपने साथ रख सकते हैं, दुनिया में बदनामी के डर से। हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बर्दाश्त कर पाएँगे और न ही आपके परिवार के लोग। लूली – लंगड़ी होती वह, कानी होती तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे। इसलिए इसे आप उसके हाल पर छोड़ दीजिए यही उसका भाग्य था, यही बदा था सोच लीजिए, मर गई, सब्र कर लिया।"[3] नाजबीबी अपने माता -पिता से संबंध बनाए रखती है। इसकी खबर बस्तीवालों को नहीं होने लगती। नाजबीबी की माँ की मौत कैंसर से होती है। नाजबीबी के घर पहुँचने पर उसे माँ की मौत का पता लगता है। वह श्मशान घाट पहुँचती है ताकि अंतिम बार अपनी माँ को देख सके। नंदरानी का वहाँ पहुँचना उसके भाई नंदन को खटकता है। नन्दन मन ही मन नंदरानी को कोसता है। उसे अपनी माँ के मरने के दुःख से अधिक शर्मिंदगी महसूस हो रही थी कि क्या सोच रहे होंगें ये नाते – रिश्तेदार कि जिसे वे मृत समझ रहे थे, वह तो ट्रांसजेंडर के रूप में आज तक जीवित है। बड़े भाई नन्दन ने उसे वहाँ से निकल जाने का आदेश दिया तब वह इतना ही कह सकी कि वह खुद ही चली जाएगी। उसके पापा का ख्याल रखना, वे बहुत दुखी हैं। वह कभी भी उसकी जिंदगी में दखल नहीं देगी। सोना उसके जीने का मकसद बन जाती है। दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। बस्तीवालों के आँखों का तारा है सोना। उसकी खुशी में सब शरीक होकर अपना गम भूल जाते हैं। सोना का साथ उनके लिए महत्वपूर्ण बन जाता है। अब सोना से बिछुड़ने की बात तक वे सोच नहीं सकते। ट्रांसजेंडर बस्ती में छैलू जैसे लोग भी बसते हैं जो किसी लड़की के साथ छेड़छाड़ करनेवालों का विरोध करता है। उसका मानना है कि अगर सोना भी बड़ी होगी और उसके साथ कोई ज्यादती करेगा तो वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। सामने सड़क के उस तरफ स्कूल की गली वाले मोड़ पर तीन लड़के मिलकर लातों – मुक्कों से छैलू को पीट रहे थे। नाजबीबी दौडकर वहाँ पहुँचती है। नाजबीबी के पहुँचते ही वे लड़के वहाँ से रफा – दफा हो जाते हैं। नाजबीबी उनके पीछे पत्थर लेकर दौड़ पड़ी। छैलू ने बताया कि सोना के स्कूल की एक बड़ी लड़की है उसे ये सब रोज तंग करते थे, उसका दुपट्टा खींचते हुए छैलू ने देख लिया था। वह स्कूल के दरबान से बताने लगी तो वह उलटे लड़की को ही उल्टा -सीधा कहने लगे। छैलू ने डांटा तो ये सब उसके पीछे पड़ गए।

विस्थापन के साथ – साथ समाज के ताने सुनने पड़ते हैं और शर्मिंदा होना पड़ता है। जब नाजबीबी सोना को स्कूल में भर्ती कराने के लिए वहाँ पहुँचती है तब स्कूल का दरबान और स्कूल के टीचर मिलकर उसका अपमान करते हैं। एक टीचर ताना मारती है कि आज शायद बड़ी बहन जी विद्यालय की छठी मना रही हैं। नाजबीबी यह सुनकर तिलमिला उठती है। लेकिन वह चुप नहीं रहती, उन्हें मुहतोड़ जवाब देती है। सोना का नाम स्कूल में लिखवाती है। तमाम मुश्किलों का सामना करते हुए भी वह बच्ची सोना की पढाई जारी रखती है।

उपन्यास में नाजबीबी की कथा के समानान्तर मानवी की कथा भी चलती है। मानवी की आयु 30 साल की है। वह दैनिक अखबार के साप्ताहिक फीचर 'आधी शक्ति' की संपादक है। अपने मृदु व्यवहार और सहज आचरण के कारण वह पूरे आफिस में आदर की पात्र है। वह तन्मयता के साथ इस कॉलम के लिए विषय सामग्री जुटाती है। समाज द्वारा सताई गयी, लाचार – बेबस स्त्रियों से मिलकर उनका दुखड़ा सुनती है और उनका हौसला अफ्सायी करती है। अनिता। मानवी नारी उद्धार गृह की लड़कियों का इंटरव्यू लेना चाहती है, लेकिन नारी उद्धार गृह की वार्डन रीता देवी इसके लिए तैयार नहीं होती। नारी उद्धार गृह में रीता देवी द्वारा गलत काम किया जा रहा है, इसकी पोल मानवी खोलना चाहती है। इसलिए वह रीता देवी की आँखों में खटकने लगती है। मानवी ट्रांसजेंडर पर भी लिखना चाहती है। पहले मेहताब गुरु इसके लिए तैयार नहीं होते, लेकिन बाद में वे मानवी के करीब आ जाते हैं और इन पर मानवी द्वारा लिखा फीचर 'हमसे सबक लें – शिखंडी गुरु' प्रकाशित होता है। उनके द्वारा पाली गई बच्ची सोना को जब पुलिसवाले

पकड़ लेते हैं और उन्हें मजबूर होकर सोना को नारी उद्धार गृह भेजना पड़ता है। नारी उद्धार गृह की पोल खुलकर जब मीडिया में छपती है, तब मेहताब गुरु और नाजबीबी सोना को वहाँ से आजाद कराने के लिए मानवी की मदद माँगते है। सोना को छुड़ाने की कोशिश के दौरान राजनेता मन्नाबाबू और उनके साथियों की द्वारा मानवी पर गोली चलाई जाती है। वारदाद के समय छैलू और नाजबीबी वहाँ उपस्थित थे इसलिए मानवी बच जाती है। अस्पताल में मानवी डी.एम आनंद कुमार की मदद से सोना को नारी उद्धार गृह से मुक्त करने की बात कहती है। साथ ही साथ मानवी यह भी चाहती है कि भृष्ट नेता मन्नाबाबू के विरोध में नाजबीबी को परचा भरना होगा। इसके लिए नाजबीबी तैयार हो जाती है। ट्रांसजेंडरों के प्रति सकारात्मक नज़रिए के साथ उपन्यास का अंत लेखिका ने किया है। देश के विकास और भलाई के लिए ट्रांसजेंडर समाज का सहयोग भी अनिवार्य है। इन्हें मुख्यधारा से जुड़ना होगा, दर-दर की ठोकरें खाना इनकी नियति नहीं है।

निष्कर्ष -: 'यमदीप' उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है। यमदीप एक ऐसा दीप है जिसे दीपावली के एक दिन पहले यमराज के नाम निकालकर बाहर कूड़े-करकट या घूरे पर रख दिया जाता है। उसे कोई मुड़कर नहीं देखता कि वह बुझ गया है या टिमटिमाता हुआ अपने चारों ओर प्रकाश की ज्योति फैला रहा है। संपन्न घराने में जन्म लेकर भी मात्र ट्रांसजेंडर होने के कारण घर और समाज से निष्कासित होकर दर-दर की ठोकरें खाने को विवश है यह ट्रांसजेंडर समाज। मेजर के घर में जन्म लेनेवाली नन्दरानी उर्फ नाजबीबी को माता – पिता का प्यार, सुरक्षा नसीब होने पर भी विस्थापन के दंश से गुज़रना पड़ता है। यमदीप और ट्रांसजेंडरों में यह समानता है कि यमदीप के प्रज्वलित होने पर फुलझड़ियाँ नहीं छूटती और न ही पूजा-अर्चना की जाती है। उसी प्रकार ट्रांसजेंडर बच्चे के जन्म पर कोई खुशी नहीं मनाई जाती। नन्दरानी के जन्म पर जब यह पता चलता है कि वह एक ट्रांसजेंडर है तब उसके पिता फूटकर रोते हैं। बच्चे की दादी, बच्चे और उसकी माँ को ननिहाल भेज देती है। बच्चे के जन्म पर कोई खुशी जाहिर नहीं की जाती। यमदीप का तेल सूख जाता है, लेकिन लेखिका ने यह उघाड़ने का कार्य किया है कि ट्रांसजेंडर समाज संवेदनहीन नहीं होते बल्कि मुख्यधारा की समाज की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होते हैं। निरंतर उत्पीडन को झेलते रहने पर भी उनके भीतर की इन्सानियत कभी नहीं मिटती। उपन्यास में नन्दरानी उर्फ नाजबीबी को इन्सानियत के मिसाल के तौर पर पेश किया गया है। नाजबीबी के अलावा मेहताब गुरु, छैलू, अकरम, चमेली, शबनम, मंजू आदि पात्र भी अपने भीतर की इन्सानियत को जिलाए रखते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची -:

1. नीरजा माधव - यमदीप -पृ:12
2. नीरजा माधव - यमदीप -पृ:87
3. नीरजा माधव - यमदीप -पृ:93

•